

ੴ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ
ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

॥ ਜਪੁ ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥

ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥੧॥

ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵੈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥

ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵੈ ਜੇ ਲਾਝ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥

ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥

ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥

ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਇਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥

ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਇ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥

हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥

हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥

इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥

नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥

गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥

गावै को गुण वडिआईआ चार ॥

गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

गावै को साजि करे तनु खेह ॥

गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

गावै को जापै दिसै दूरि ॥

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥

कथना कथी न आवै तोटि ॥

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥

देदा दे लैदे थकि पाहि ॥

जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥

हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥

नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥

आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥

फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥

अम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥

आपे आपि निरंजनु सोइ ॥

जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥

नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥

दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥

जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥

गुरा इक देहि बुझाई ॥

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥

सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझाई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
मंनै सगल भवण की सुधि ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥
मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥
मंनै मगु न चलै पंथु ॥
मंनै धरम सेती सनबंधु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

असंख जप असंख भाउ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥

असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥

असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

असंख नाव असंख थाव ॥
अगम अगम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपडु होइ ॥

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥

सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥

कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥

वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥

थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥

किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥

नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥

नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥

अंतु न जापै कीता आकारु ॥

अंतु न जापै पारावारु ॥

अंत कारणि केते बिललाहि ॥

ता के अंत न पाए जाहि ॥

एहु अंतु न जाणै कोइ ॥

बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥

ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥

तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥

नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥

वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

केते मंगहि जोध अपार ॥

केतिआ गणत नही वीचारु ॥

केते खपि तुटहि वेकार ॥

केते लै लै मुकरु पाहि ॥

केते मूरख खाही खाहि ॥

केतिआ दूख भूख सद मार ॥

एहि भि दाति तेरी दातार ॥

बंदि खलासी भाणै होइ ॥

होरु आखि न सकै कोइ ॥

जे को खाइकु आखणि पाइ ॥

ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥

आपे जाणै आपे देइ ॥

आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥
अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥

आखहि वेद पाठ पुराण ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥
आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥
आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥
केते आखहि आखणि पाहि ॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
एते कीते होरि करेहि ॥
ता आखि न सकहि केई केइ ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥
नानक जाणै साचा सोइ ॥

जे को आखै बोलुविगाडु ॥

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥

केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥

गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥

गावहि जोध महाबल सूरु गावहि खाणी चारे ॥

गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥

होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥

करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥

खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥

आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥

आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥

इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥

जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥

जो किछु पाइआ सु एका वार ॥

करि करि वेखै सिरजणहारु ॥

नानक सचे की साची कार ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥

लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥

एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़े ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
नानक उत्तमु नीचु न कोइ ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥

करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई ओथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥

केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥
सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥

तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥

वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

